CPCRI ने नारियल और कोको की खेती के लिये पेश की नई किस्में

[स्रोत: द हिंदू](#)

सेंट्रल प्लांटेशन क्रॉप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट (CPCRI) ने हाल ही में भारत में **नारियल** और कोको की खेती में क्रांति लाने के उद्देश्य से कोको की दो नई किस्मों के साथ नारियल की एक नई किस्म विकसित की है।

- **कल्पा सुवर्णा, नारियल की किस्म बड़े आकार के फल, उच्च जल सामग्री और तेल सामग्री जैसी विशिष्ट विशेषताओं के साथ नारियल तथा खोपरा उत्पादन के लिये आदर्श है।**
- कोको की किस्में **VTL CH I** और **VTL CH II** में वसा तथा पोषक तत्त्वों की मात्रा अधिक है, VTL CH II **काली फली सड़न** के प्रति सहनशील है।
    - काली फली सड़न एक कवक रोग है जो कोको के पेड़ों को प्रभावित करता है। यह मुख्य रूप से **फाइटोफ्थोरा वंश** से संबंधित कवक प्रजातियों के कारण होता है।
- VTL CH I **कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश** में उगाने के लिये उपयुक्त है जबकि VTL CH II**कर्नाटक, केरल, गुजरात तथा तमिलनाडु** में उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों के लिये अनुशंसित है।
    - कोको की दोनों किस्मों से प्रतिवर्ष प्रति पेड़ 1.5 किलोग्राम से 2.5 किलोग्राम सूखी फलियाँ प्राप्त होती हैं।
- CPCRI की स्थापना वर्ष 1916 में मद्रास सरकार द्वारा की गई थी और बाद में इसे वर्ष 1947 में भारतीय केंद्रीय नारियल समिति में शामिल किया गया था।
    - वर्ष 1970 में, यह **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद** के तहत राष्ट्रीय कृषि प्रणाली (National Agricultural System - NRS) का हिस्सा बन गया।
    - यह नारियल, सुपारी, कोको, काजू और मसालों के लिये आनुवंशिक रूप से बेहतर रोपण सामग्री पर शोध और विकास पर केंद्रित है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/cpcri-introduces-new-varieties-for-coconut-and-cocoa-cultivation